विश्व को एक नया आकार देती महिला

महिलायें समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका ही सिर्फ नहीं निभातीं, बल्कि एक सशक्त समाज और उन्नत देश भी बनाती हैं। उनके बिना विकसित तथा समृद्ध समाज, सशक्त समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ब्रिघम यंग के द्वारा एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'अगर आप एक आदमी को शिक्षित कर रहे हैं तो आप सिर्फ एक आदमी को ही शिक्षित कर रहे हैं, पर अगर आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर रहे हैं। समाज के विकास के लिए यह बेहद ज़रूरी है कि लड़कियों को शिक्षा में किसी तरह की कमी न आने दें क्योंकि उन्हें ही आने वाले समय में लड़कों के साथ समाज को एक नई दिशा देनी है।' ब्रिघम यंग की बात को यदि सच माना जाए तो उस हिसाब से अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास कर पायेगा, पर वहीं अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है।

ब्र.कु. गंगाधर

महिलाओं के बिना मनुष्य-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इतना महत्व उनका समाज और देश बनाने में है। पर कहीं पागलपन के कारण उन्हें इतनी तवज्जो न देने के कारण हम जैसा चाहते हैं वैसा समाज नहीं बन पाता। भारत की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलायें करती हैं। अगर उनकी क्षमता पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसका साफ-साफ मतलब है कि देश की आधी जनसंख्या अशिक्षित रह जायेगी और अगर महिलायें ही पढ़ी-लिखी नहीं होंगी तो देश कभी प्रगति नहीं कर पायेगा। हमें यह बात समझनी होगी कि अगर एक महिला अनपढ़ होते हुए भी घर इतना अच्छा संभाल लेती है तो पढ़ी-लिखी महिला, विवेकवान, व्यवहारिक महिला समाज और देश को कितनी अच्छी तरह संभाल लेगी।

कहा जाता है, पुरुष सिर्फ मकान बनाता है, पर महिला घर बनाती, समाज बनाती, समाज से देश बनाती। इसका सीधा-सा अर्थ यही है कि महिला का योगदान हर जगह है। महिला की क्षमता को नज़रअंदाज़ करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। शिक्षा और महिला-सशक्तिकरण के बिना परिवार, समाज और देश का विकास नहीं हो सकता। महिला जानती है या उसमें कुदरती ये खूबी है कि उसे कब और किस तरह से मुसीबतों से निपटना है। ज़रूरत है तो बस उसके सपनों को आज़ादी देने की। तब तो कई बार हम कहते हैं, पुरुष की सफलता के पीछे महिला होती है। हम आज ऐसे ही एक संगठन को देखते व जानते हैं जिसकी बागडोर स्वयं महिलायें ही संभालती हैं। विश्व का सबसे वृहद संस्थान महिलाओं द्वारा न सिर्फ सुचारु रूप से संचालित किया जा रहा है अपितु एक उन्नत चरित्रशील, विवेकशील समाज बनाने की नई दिशा दी जा रही है। आपने भी ऐसी महिलायें अपने इर्द-गिर्द देखी होंगी व संपर्क में भी आये होंगे जो बहुत ही साधारण, श्वेत वस्त्रधारी व सुशील रूप से समाज को गढ़ रही हैं। क्योंकि वे न सिर्फ सुशिक्षित हैं बल्कि उन्होंने आध्यात्मिकता को भी अपने जीवन में बखूबी उतारा है। आपकी जिज्ञासा होगी कि ऐसी कौन-सी संस्था है, तो हम नाम बता देना चाहते हैं, वो हैं ब्रह्माकुमारीज़। इस संस्थान को आप देखें, समझें कि ये महिलायें सुदृढ़ समाज की परिकल्पना को कैसे आकार दे रही हैं। 140 देशों में वे आध्यात्मिक अभियान चलाकर वसुधैव कुटुम्बकम का एक जीता-जागता उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत कर रही हैं। इनकी खूबी यह है कि वे आध्यात्मिकता को अपनाकर अपने हर क्षेत्र में आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग करती हैं। इतना ही नहीं, अपने कल्याणमयी, मंगलमयी अनुभव से भटके हुए मानव को सही राह दिखा रही हैं और इंसान में इंसानियत की जान डालकर उसको विवेकशील बना रही हैं। इंसान का मतलब ही है 'इन-शान'। माना 'इन' आध्यात्मिक पुट को व्यवहारिक प्रारूप देकर उसको 'शान' में लाना। तो इस तरह आज हमारे सामने एक महिला संस्थान उदाहरण है कि एक विवेकशील, चरित्रवान और अपनी भीतरी क्षमताओं को सही दिशा देने वाली महिला क्या नहीं कर सकती! वह किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं है।

बाबा की आज्ञा है- हर बात में डिटैच रहो

हम सभी बच्चों का पहला निश्चय है कि स्वयं ज्ञान सागर बाबा हमें पढ़ाता भी है, वर्सा भी देता है तो मुक्ति-जीवनमुक्ति भी देता है। जब यह निश्चय है तब नशा है और जब नशा है तब उनकी आज्ञाओं पर हम चलते हैं। तीनों रूपों से बाबा हमें रोज़ श्रृंगारता है। सतगुरू रूप से वरदान देता है, जिन वरदानों से हम सभी भरपूर होकर आगे बढ़ते हैं। ज्ञान रत्नों से हमारा श्रृंगार करता है। प्यार का सागर हमें कितनी पालना देता है, आज्ञायें करता है, उससे भी हम आगे बढ़ते हैं। दुनिया के लोग भौतिकवाद में रहते हैं और हम सबको बाबा ने सारी दुनिया की भौतिक बातों से दूर कर दिया है। किसी की बुद्धि में यह नहीं है कि हमें वापस घर जाना है। हमें मूलवतन बुद्धि में याद है। सूक्ष्मवतन भी संगमयुग पर हम बच्चों के लिए है। हम यही पुरूषार्थ करते हैं कि बाप समान फरिश्ता बनें, सम्पन्न बनें और सम्पन्न बनकर वाया सूक्ष्मवतन घर चलें। तभी छोटे-बड़े को बाबा ने यही लक्ष्य दिया है कि बाप समान सम्पूर्ण बनना है। चाहे कोई 25 वर्ष का हो, 5 वर्ष का हो या 5 मास का। सबकी बुद्धि में यही लक्ष्य है कि हमें बाप के समान सम्पूर्ण, कर्मातीत बनना है। जब यह लक्ष्य है तो चेक करना होता है कि हमारी स्थिति ऐसी बनी है या अभी हम बाप से कितना दूर हैं! क्या हम एवररेडी हैं? हम सर्व बंधनों से मुक्त, ईश्वरीय नशे में, एक की ही लगन में इतना मस्त रहते हैं जो आज भी शरीर छूटे तो हमारे कर्मों का हिसाब पीछे न हो। हमने जिस मंज़िल पर पांव रखा है, उसे पार करना है।

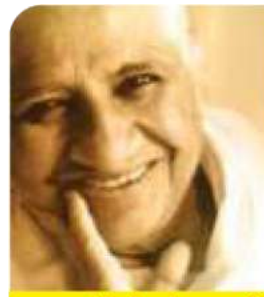
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जिसने इस राज़ को समझा कि मुझे इस देह के भान से डिटैच रहना है, उनकी इस दुनिया में किसी भी बात से अटैचमेंट नहीं रहती। बाबा ने जो हमें 4 सब्जेक्ट दी हैं- उन चारों का ही बैलेंस चाहिए।

हम रोज़ सोचते हैं कि आखिर हमें इतनी ऊंची मंज़िल पर ले जाने वाला कौन है! जो दुनिया को नहीं मिला, न मिल सकता है वह है हमारा बाबा। जो हमें इतनी सहज नॉलेज देकर अपने समान बना रहा है।

बाबा हमें चार सब्जेक्ट के चार लेसन देता है- हम कितने भी कार्य में रहें लेकिन हमें देह के भान से परे रहना है। देह-अभिमान का भी त्याग हो-यह कहना तो सहज है लेकिन इसी में ही मेहनत है। देह के भान से परे रहो तो सर्व समस्यायें हल हो जायेंगी। खुद लाइट हो जायेंगे। यही है कर्मातीत स्थिति बनाने का पहला साधन व पहली साधना। यही अभ्यास है, यही बाबा की रोज़ की आज्ञा है। अपने से पूछो- रोज मैं सवेरे से रात तक इस आज्ञा का पालन करती हूँ! जो इस आज्ञा को रोज़ पालन करते, फुल अटेन्शन रखते उनकी सब प्रकार की धारणायें अच्छी होती हैं। जिसने इस राज़ को समझा कि मुझे इस देह के भान से डिटैच रहना है, उनकी इस दुनिया में किसी भी बात से अटैचमेंट नहीं रहती। बाबा ने जो हमें 4 सब्जेक्ट दी हैं- उन चारों का ही बैलेंस चाहिए। लेकिन कभी-कभी सर्विस में तो बहुत आगे इन्ट्रेस्ट बढ़ जाता है। बाकी पीछे की तीनों सब्जेक्ट में अटेन्शन कम हो जाता है। लेकिन चारों सब्जेक्ट एक बैलेंस में रहें यह है पढ़ाई का सार। कोई कहते- मेरा बाबा पर बहुत विश्वास है, लेकिन बाबा से विश्वास माना आज्ञाओं पर विश्वास। बाबा की पहली-पहली आज्ञा है कि इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी नहीं देखो। इस देह में रहते भी देह से ममत्व नहीं रखो। किसी भी व्यक्ति, वैभव से अटैचमेंट न रहे। तो अपने आपसे पूछो किसी भी बात में रिचक मात्र भी बुद्धि का अटैचमेंट है? अगर स्वयं की स्वयं से भी अटैचमेंट है तो भी रांग है। दूसरे से है तो भी रांग है। अगर कोई कहे हम सर्विस के बिगर रह नहीं सकते, बेचैन हो जाते हैं तो यह भी अटैचमेंट हो गई। यह भी नहीं चाहिए क्योंकि बाबा हमें बहुत-बहुत दूर चैन की दुनिया में ले जा रहा है। किसी भी प्रकार की वहाँ बेचैनी नहीं होगी। अगर कभी यह बेचैनी का शब्द भी आता है तो समझना चाहिए आज स्थिति नीचे-ऊपर है। हम सबको चैन देने वाले हैं, चैन देने वाले अगर बेचैन हो जाए तो समझो गड़बड़ है। बाबा की आज्ञा है- हर बात में डिटैच रहो। सब कुछ करो लेकिन करते हुए भी डिटैच रहो।

जब अपने स्वरूप की स्मृति आ गई तो वहाँ समस्या क्या होगी...!!!

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ओम् शांति का एक शब्द मंत्र कहने से ही अपने स्वरूप की स्मृति याद दिलाता है। दूसरा बाबा शांति का सागर है उसकी स्मृति दिलाता है और तीसरी बात अपना घर शांतिधाम उसकी स्मृति दिलाता है। तो जब भी हम ओम् शांति शब्द बोलते हैं तो हमें तीनों ही स्मृति आती हैं और स्मृति से समर्थी आती है। कैसी भी समस्या हो लेकिन तीनों ही याद आ जावें- स्वयं का रूप, बाप और अपना घर, अगर यह तीनों बातें आप अभी एक सेकण्ड में याद करो, अनुभव करो तो क्या कोई समस्या आपके आगे ठहर सकती है? जहाँ बाबा याद आ गया, अपने घर की याद आ गई, अपने स्वरूप की स्मृति आ गई वहाँ समस्या क्या होगी? लेकिन ओम् शांति तो कह देते हैं, अर्थ स्मृति में नहीं आता है। तो कभी भी कोई भी समस्या आवे, जैसे आग लगती है तो फौरन क्या याद आता है? पानी। ऐसे जब हम ओम् शांति कहते हैं और स्मृति स्वरूप हो जाते हैं, तो स्वतः ही सारी समस्यायें खत्म होंगी। जैसे यहाँ अन्धियारा हो जाये और हम लाइट का स्विच ऑन करें तो अंधकार स्वतः ही चला जाता है ना! लाइट का आना अंधकार का स्वतः ही जाना। ऐसे ही यह भी अभ्यास अगर करो तो कोई भी बात आवे, तो अर्थ सहित तीनों याद से ओम् शांति कहो तो समस्या ठहर नहीं सकती है। ऐसा अनुभव है?

बाबा ने हम टीचर्स को गुरूभाई कहा है, गुरू के भाई, इतनी बड़ी सीट दी है ना! सभी मुरली सुनाते हैं ना! गुरू की जो गद्दी है, मुरली सुनाने की, वो बाबा ने किसको दी? टीचर को। कोई भाई व कोई स्टूडेन्ट कहे हम भी रोज़ मुरली सुनायें तो आप देंगी, नहीं ना! टीचर को ही देते हैं इसलिए बाबा हमको गुरूभाई कहता है, तो बाबा ने महिमा भी की है टीचर्स की कि मेरे समान हैं, गुरूभाई हैं, लेकिन बाबा इशारा देता कि जो कुछ कहते हो उसका पहले अनुभव हो। मैं आत्मा हूँ, शरीर अलग है, आत्मा अलग है लेकिन आत्मा जिस समय अनुभव होगी, तो आत्म-अभिमानी बनने से ऑटोमेटिकली सेकण्ड में बाप के साथ कनेक्शन स्वतः ही जुट जायेगा। हम सब टीचर बनें क्यों? सरेंडर हुए क्यों? जब हम समर्पण हुए बाबा के प्रति तो सबसे पहले हमको बाबा के प्यार ही ने आकर्षित किया ना! ज्ञान तो पीछे समझा, चाहे बहनों द्वारा बाबा ने दिया, दादियों द्वारा दिया या टोली द्वारा मिला क्योंकि कईयों को टोली भी प्रेम की आकर्षण करती है। लेकिन पहले-पहले परमात्म प्यार ने आपको आकर्षित किया। तो उसी प्यार में कोई खोये रहें तो आप सोचो उनकी स्थिति कितनी ऊँची और श्रेष्ठ होगी! फिर ऐसों के आगे समस्या और संस्कार क्या हैं, कुछ नहीं क्योंकि यही दो बातें सबको परेशान करती हैं जिसको कहते हैं हम चाहते नहीं हैं लेकिन मेरी नेचर ही ऐसी है। तो पहले यह सोचो कि समस्यायें क्यों आती हैं? पुरूषार्थ तीव्र क्यों नहीं होता है? कमज़ोरियाँ क्यों आती हैं? और चाहते भी हैं खत्म हो लेकिन नहीं हो पाती,तो उसका कारण क्या है? आत्म-अनुभूति की कमी है। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करने के अभ्यास की कमी है। तो इस अभ्यास को हमें बढ़ाना है।

हमें बुद्धि को शांत, प्लेन रखना है

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हमारा मीठा बाबा सहज विधि जो सुना रहा है उससे तुरन्त सिद्धि मिल रही है, एक्शन प्लैन और क्या बनाना है? रूकावट भले आये परंतु रूकेंगे नहीं। हिम्मत के साथ विश्वास इतना है कि रूकने वाली बातें आयेंगी और वो चली जायेंगी। इतना बहादुर बनना है। जो साक्षी होकर पार्ट प्ले करता है वो न्यारा और परमात्म प्यार की शक्ति से लाइट-माइट हो जाता है। यह प्लैन नहीं है प्रैक्टिकल है।

अपसेट होने की आदत नहीं है पर सब खुश रहें, यह ध्यान ज़रूर है। बाबा के घर में जो भी आये खुश होके जाये, यह भावना हमेशा रही है। कोई भी चीज़ मेरी नहीं है। इससे आत्मा बाबा का प्यार खींचने की पात्र बनी है। अपनी निजी शक्ति सेवा और सम्बन्ध में बढ़ती रहे, खर्च न हो, यह कोशिश रहती है। देह-अभिमान का अंश भी होगा तो मार्क्स कम हो जायेंगी। अगर सच्चा पुरूषार्थी हूँ तो फुल मार्क्स हों। पालना, पढ़ाई, प्राप्तियाँ जो मिली हैं वो हमारे चेहरे और चलन में अगर नहीं हैं तो शान नहीं है।

प्लैन बनाने वाले बाबा के बच्चे बहुत बैठे हैं। अच्छा प्लैन बनाकर हमको देते हैं। हमें बुद्धि को शांत, प्लेन रखना है। ड्रामा में सब हुआ पड़ा है, बाबा कहता भी है अगर ब्रह्मा बाबा से भी कुछ हो गया तो बाबा ठीक कर देगा। पर हमको अपनी मनमत शामिल नहीं करनी है।

कुछ भी बात सामने आ जाये अंदर रेडी रहें, बाबा कहता बच्ची सब ठीक हो जायेगा। ये मीठे बाबा के बोल हैं- बच्ची हो जायेगा। बाबा के बोल में इतनी शक्ति है तो मैं क्यों कहूँ- कैसे होगा, कौन करेगा! आज दिन तक यह खेल देखा है। बाबा कैसे करता कराता है, यह खेल देखा है, यही है प्रैक्टिकल प्लैन।